सूफ़ियाना ग़ज़ल गायकी के रौशन चिराग 'अश्वनी वर्मा'

''वो चाँद एक टूटा हुआ टुकड़ा मेरे नाम का है,
ये मेरा कौल नहीं, हज़रते - खय्याम का है॥
हमसे पूछो कि ग़ज़ल मांगती है कितना लहू,
सब समझते हैं, ये काम बड़े आराम का है॥''

ग़ज़ल कहना, ग़ज़ल गाना और उसे पूरी शिद्दत से समझना, वाकई एक मुश्किल काम है। क्योंकि इस फन का मिजाज ही ऐसा है जो बहुत इत्मीनान और सब्र चाहता है। छत्तीसगढ़ में ग़ज़ल कहने वाले भी हुए हैं और ग़ज़ल पेश करने वाले फनकार भी हुए हैं। बदलते दौर में, जब हर शय बदलने को बेताब नज़र आती है, तब ग़ज़ल में भी अंदाज कुछ जरुर बदले हैं। लेकिन ग़ज़ल पेश करने वालों की जमात में एक नाम, ऐसा भी है जो आज भी पुरानी रिवायत को निभा रहा है, ताकि हम और आप जान सकें, कि आखिर ग़ज़ल का इब्तिताई रंग किस तरह का था। छत्तीसगढ़ में इस फनकार को अश्वनी वर्मा के नाम से लोग पहचानते हैं। भिलाई निवासी इस गायक ने शास्त्रीय संगीत की गायकी सीखने के साथ ग़ज़ल गायकी की परम्परा भी बखूबी सीखी है। कुछ मौकों पर वे खुद बदले हैं, और कई अवसरों पर उन्होंने वक्त के सांचे को बदलने की कोशिश की है।

पिछले 30 वर्षों से वे अपनी गायकी को एक अलग मुकाम पर पहुंचाने की कोशिश कर रहे हैं। देश भर में अनेक मंचों पर वे अपनी गायकी के जौहर दिखाते रहे हैं। हाल ही में उन से ग़ज़ल गायकी पर बातचीत हुई। पेश है उसी मुलाकात के कुछ अंश-

० अश्वनी जी, आपकी गायकी, आज की गायकी की तुलना में किस तरह की है?

- मेरी गायकी मेरे गुरु और पिता स्व. रतनचंद वर्मा के सानिध्य में तैयार हुई है। हमारे परिवार में लाहौर घराना या पंजाब घराना की गायकी की परंपरा रही है। इसमें हम थोड़ा बहुत बदलाव तो कर रहे हैं, जो रागों के भीतर रहे। लेकिन केवल लोकप्रियता पाने की गरज़ से रिवायत को छोड़ना मुनासिब नहीं है - ऐसा मैं मानता हूं। आज की गायकी में बहुत से लोग परंपरा को छोड़ने में झिझक महसूस नहीं करते। लेकिन ये बहुत दूर तक और देर तक नहीं चल सकती।

० अपने परिवार और संगीत की तालीम के बारे में कुछ बताएं।

- मैं अपने परिवार में गायन की तीसरी पीढ़ी का प्रतिनिधि हूँ। आज से करीब 180 वर्ष पहले मेरे दादाजी ने अपने बचपन में लाहौर घराने की गायकी शुरु की। अब मैं परंपरागत गायकी को आगे बढ़ाने में लगा हुआ हूँ। मेरे दादा स्वर्गीय लक्ष्मणदास ने हिमाचल प्रदेश में रहते हुए ध्रुपद-धमार गायकी को नया आयाम दिया।

मेरे पिता स्व. रतनचंद वर्मा ने लाहौर के उस्ताद फतेहदीन खाँ साहब से ठुमरी और ग़ज़ल की तालीम ली। उन्होंने पंजाब घराने से उर्दू अल्फाज के सही उच्चारण के अलावा गायकी और स्वर विस्तार की बारीकियां सीखकर, अपने चाहने वालों को हर तरह से मुतास्सिर किया। उन्होंने गायकी में सिद्धहस्त होने के अलावा, तबला वादन मे भी 'माहिर' का खिताब हासिल किया था।

० इसका फायदा आपको भी निश्चित रूप से मिला होगा।

-हाँ, बिल्कुल। मुझे हमेशा इस बात का फायदा मिला कि मेरे पिता ने एक से बढ़कर एक उस्तादों से गायन की बारीकियां सीखीं। खास तौर पर, उस्ताद सलामत अली, ठाकुर ओंकरनाथ बड़े गुलाम अली खाँ साहब, तवलानवाज उस्ताद अल्लाहरक्खा खाँ जैसे नामी कलाकारों के साथ संगति करके उन्होंने बहुत बड़ा मुकाम बनाया था।

० आपने अपने पिता से कौन सी खास शैली सीखी?

- मैंने अपने पिताजी से शास्त्रीय रागों पर आधारित ग़ज़ल गायकी सीखने में खास दिलचस्पी दिखाई। इसके अलावा गुरुबानी और शबद गायन की खास तालीम भी मैंने ली। इस गायन का वाकई, एक अलग ही मज़ा है। मुझे अभी भी मेरे मंच प्रदर्शन के दौरान श्रोता-साथी शबद और गुरुवाणी सुनाने को कहते हैं. इसे गाते समय, मुझे भी बहुत दुर्लभ अनुभव होता है।

० आपने तो आकाशवाणी और दूरदर्शन पर भी अपनी गायकी पेश की है। सीधे श्रोताओं के सामने गाना, और रेडियो या टीवी पर गाने में क्या फर्क है?

- जाहिर है, कि श्रोताओं के सामने गाना ज्यादा रोमांचक और चुनौतीपूर्ण होता है। मंच पर अच्छा गाने से तारीफ भी तुरंत मिलती है और अच्छा नहीं गाने पर, श्रोता उठकर जाने लगते हैं। दूसरी तरफ रेडियो, टीवी में समय का बंधन होता है। फिर भी वहां कोई श्रोताओं की प्रतिक्रिया नहीं होने से एक दूसरा अनुभव होता है। मुझे मंच पर गाना पसंद है।

० अपनी गायकी में खास क्षण आप किसे मानते है?

-यूं तो बहुत से पुरस्कार और सम्मान मिले हैं। लेकिन मुम्बई में सुर श्रृंगार सम्मान मिलना एक यादगार क्षण था और इसने 1996 में टीवी सीरियल- 'मुजरिम हाज़िर है जनाब' का शीर्षक गीत गाने और संगीतबद्ध करने का अवसर मिलाया। इसके अलावा भी देश भर में मंच प्रदर्शन के दौरान बहुत से अच्छे अनुभव रहे हैं।

० आपने बताया कि आपको बहुत से पुरस्कार मिले हैं। इनमे से कुछ महत्वपूर्ण उप्लब्धियों के रुप में आप किसे याद करना चाहेंगे?

-भिलाई में मैंने करीब 25 वर्षों से गायन किया है। इसलिये अपने गृहनगर में सम्मानित होने का सुकून बहुत ज्यादा रहा। यहां मुझे 'स्वर विहार', 'स्वर निनाद', 'स्वर संध्या' और 'सुरश्री' सम्मान मिल चुके हैं। दिल्ली दूरदर्शन के सेंट्रल प्रोडक्शन सेंटर (सी.पी.सी.) में मुझे 'महफिल' सम्मान मिल चुका है। इसे मैं बहुत अहम मानता हूँ। इसके अलावा रायपुर सहित छत्तीसगढ़ के अनेक मंचों पर मुझे नवाज़ा गया है। अपने राज्य में इस तरह का सम्मान मिलने से सचमुच बहुत अच्छा लगता है।

० अश्वनीजी, आपने मुम्बई से संगीत में मास्टर डिग्री हासिल की है, और आप नई दिल्ली की संगीत स्वरपरीक्षण संस्था से 'ए' ग्रेड कलाकार भी चुने गये हैं। तब इन सफलताओ और तैयार तैयारियों से, आगे और किस मंजिल की तरफ जाना चाहते हैं आप...?

-देखिये, एक कलाकार को सम्मान और उपलब्धियां तो बहुत मिल जाती हैं। इसके बाद भी उसे तलाश होती है अपने चाहने वाले कद्रदानों की। अच्छे श्रोता ही हमारे लिये सबसे बड़ी दौलत है। मेरी भी ख्वाहिश यही है कि मैं परंपरागत ग़ज़ल गायकी के जरिये देश भर में अपनी एक अलग पहचान रखूं। इससे ग़ज़ल के शौकीनों को ये मालूम हो सकेगा कि शुरुआती दौर में ग़ज़ल गायकी की शान क्या थी।

० तो इसके लिये, आप उसी तरह के कलाम भी चुनते होंगे, जो आपकी गायकी के लिये ठीक हों।

- बिल्कुल। मैं आज भी अहमद फराज़ फैज, फिराक, जिगर गालिब, कतील शिफाई, अहमद नदीम कासमी और नासिर काज़मी के चुनिंदा कलमों को गाना पसंद करता हूँ। ऐसा नहीं है कि बशीर बद्र या निदा फाज़ली जैसे आज के शायरों को बिल्कुल नहीं गाते। लेकिन पुराने शायरों के कलामों को गाने में ज्यादा मेहनत लगती है क्योंकि उनके 'मीटर' अलग होते हैं।

० ग़ज़ल गायकी के बदलते अंदाज पर आप क्या सोचते हैं।

-यही कि ग़ज़ल में एक खास तरह की नज़ाकत होती है। इसे केवल बदलते दौर का ख्याल रखने के लिए, फिल्मी गानों की शक्ल नहीं देना चाहिए। ग़ज़ल सुनने वाले इतना धीरज भी रखते हैं कि वे कलाम की दूसरी लाइन का इंतजार कर सकें। उन्हें अशआर सुनते ही ग़ज़ल का अंदाज भी समझ में आ जाता है। जबकि फिल्मी गीतों में अब 'बोल' बहुत अहमियत नहीं रखते। संगीत पक्ष ज्यादा हावी है। ऐसे गाने लंबे समय तक याद भी नहीं रहते। वहीं मुकेश, रफी के गाने आज भी लोकप्रिय हैं।

० आखिर में, आपसे यही जानना चाहेंगे कि छत्तीसगढ़ राज्य बनने के बाद कलाकारों के लिए आप क्या उम्मीद करते हैं?

-बस इतना ही कि अच्छे कलाकारों को संस्कृति विभाग से प्रोत्साहन मिले, मंच मिले तो वे भी अपने सपनों को साकार कर सकते हैं और नये राज्य का नाम रौशन कर सकते हैं। हमारे यहां नए, पुराने कलाकारों की कमी नहीं है। बस उन सभी को मौका चाहिए। मैं भी अपने राज्य की पहचान बनाने के लिये समर्पित हूँ।

- विभाष कुमार झा